9

उदयपुर का दशोरा समाज

(गतिविधियां)

1. सार्वजनिक सम्पत्ति :–

उदयपुर में यद्यपि मेवाड़ में सर्वाधिक दशोरा परिवार निवास कर रहे है किन्तु इनकी कोई सार्वजनिक सम्पत्ति नहीं थी। वर्तमान में इस जाति का एक पंचायती नोहरा है तथा दूसरा इनके इष्टदेव भगवान श्री हाटकेश्वर का मंदिर है जिसकी व्यवस्था यहाँ का समाज करता है।

2. पंचायती नोहरा :–

आरंभ में इस जाति के भोजन बनाने आदि की व्यवस्था के लिए कोई सार्वजनिक स्थान नहीं था। सर्वप्रथम इस जाति के एकलिंग जी निवासी श्री कैलाशानन्द जी, जो उस समय एकलिंग जी मंदिर के गुसांई थे, ने इस जाति के लिए मोती चोहट्टा, दशोरो की गली में एक पंचायती नोहरे का निर्माण स्वयं ने करा कर इस जाति के लिए भोजन कार्य हेतु विक्रम सं. 1982 में भेंट कर दिया जो आज इनकी अक्षय कीर्ति को प्रकट करता है।

3. व्यवस्था:–

इस नोहरे की व्यवस्था के लिए कई महानुभवों नें इसमें बर्तन आदि भेंट करके इसमें भोजन आदि बनाने की व्यवस्था की तथा कुछ व्यक्ति मिलकर इसकी व्यवस्था करते रहे। इस समय इसके चोक में फर्शी जड़ाने आदि का कार्य भी किया गया।

इसके बाद इसको स्थाई व्यवस्था देने के लिए सन् 1976 ई. में एक कार्य कारिणी का गठन किया गया तथा श्री जमना लालजी दशोरा–मोती चोहट्टा की अध्यक्षता में एक लिखित विधान भी बनाया गया जिसमें भाई भगवान, श्री श्यामसुन्दर लाल जी, श्री जमना लाल जी (फोटोग्राफर), श्री लक्ष्मी शंकर जी तथा श्री फतह लाल जी (नाना भाई), सम्मिलित ने इसमें श्री लक्ष्मी शंकर जी दशोरा को इस कार्यकारिणी का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया।

इसी विधान के अनुसार समय–समय पर चुनाव होते रहे तथा नई–नई कार्यकारिणियों ने इसकी व्यवस्था का भार संभाला। ये अध्यक्ष इस प्रकार रहे–

1.	श्री लक्ष्मीशंकर जी दशोरा	1976 से 1982
2.	श्री गनेश लाल जी दशोरा	1982 से 1984
3.	श्री चन्द्रनाथ जी दशोरा	1984 से 1992
4.	श्री मोहन लाल जी दशोरा	1992 से 1993
5.	श्री जमना लाल जी दशोरा	1993 से 1994
6.	श्री नन्द लाल जी दशोरा	1994 से 1998
7.	श्री जमना लाल जी दशोरा	1998 से 2001
8.	श्री राधेश्याम जी दशोरा	2001 से वर्तमान